अफ्रीका में सुरक्षा चुनौतियां: भारत की विदेश नीति प्रतिक्रिया

*डॉ. संदीपनी दास**

वैश्विकरण की नई अनिवार्यताओं ने भारत के साथ अफ्रीका के संपर्कों/इंटरफेस में तेजी ला दी है, जोकि सदियों पुराने संपर्कों के माध्यम से वैश्विक-दृष्टिकोण और हितों की पारस्परिकता द्वारा पोषित होते रहे हैं। अत:, वर्तमान में भारत और दक्षिण अफ्रीका अधिकाधिक सुरक्षा सहयोग के महत्व को महसूस कर रहे हैं। सुरक्षा सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में संघर्ष की रोकथाम, संघर्ष सामाधान तंत्र/व्यवस्था को सुदृढ़ करना और संघर्ष-पश्चात पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को बढ़ावा देना शामिल हैं। इसे परिप्रेक्ष्य में रखते हुए, इस *नीति संक्षिप्त* में न्यायिक-राजनीतिक विवाद, जातीय-चुनावी होड़, आर्थिक विस्तार के लिए बाह्य प्रतियोगिता, अतिवादी लामबंदी और मानवीय सुरक्षा समस्या के संबंध में अफ्रीकी संघर्ष के स्रोतों और स्थूल/मैक्रो रूझानों की पहचान की जाएगी। इसमें अफ्रीका में जटिल सुरक्षा संकट की त्रि-स्तरीय (देश/क्षेत्र/अफ्रीकी संघ) आंतरिक प्रतिक्रिया का भी वर्णन किया जाएगा। इस *नीति संक्षिप्त* में द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अफ्रीकी संघ (AU) के स्तरों पर इस महाद्वीप के साथ भारत की सुरक्षा भागीदारी की गुंजाइश का पता लगाने का प्रयास किया जाएगा।

सुरक्षा चुनौतियां

अफ्रीका में मौजूदा सुरक्षा संकट की मुख्य विशेषता उलझे हुए अंतरा और अंतर-राष्ट्रीय संघर्ष/टकराव हैं। इस संकट की उत्पत्ति अनेक कारकों में नीहित हैं, जिनमें शामिल हैं: औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा मनमाना प्रादेशिक सीमांकन, बड़ी शक्तियों द्वारा शीत युद्ध गुटबंदियां, जिसने राजनीतिक व्यवस्थाओं और नागरिकों के बीच कार्यात्मक टकराव/मुकाबले को सीमित किया, जिसके परिणामस्वरूप उपनिवेशवाद-पश्चात समाजों में जनसांख्यिकीय सामंजस्य पर गतिरोध/प्रतिबंध और 'अंतर्राष्ट्रीय अधिदेश' की आड़ में इस महाद्वीप में

क्षेत्र-बाह्य शक्तियों के सहयोग से शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा चुनिंदा शीतयुद्ध-पश्चात एकपक्षीय हस्तक्षेप करना अथवा ऐसे हस्तक्षेप की धमकियों का बढ़ना। अलग-अलग अफ्रीकी देशों की घरेलू जातीय-राजनीतिक व्यवस्था की उपेक्षा ने इन बहिर्जात कारकों की स्थिति को और जटिल बना दिया है।

अफ्रीका में लगातार चुनावी मुकाबले भी हो रहे हैं, जहां 1990 के दशक के आरंभिक वर्षों से ही संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों (एसएपी) को अपनाने के बाद इसके अनेक देशों द्वारा बहु-दलीय शासन (व्यवस्था) अपना लिया गया है। जहां पूरे अफ्रीका में लोकतांत्रिक शासन के संस्थानीकरण के लिए संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम (एसएपी) उत्प्रेरक बन गए हैं वहीं पहले से ही व्याप्त जातीय तनाव की झलक इस महाद्वीप की चुनावी राजनीति में देखने को मिली है। चुनावी जनादेश पर प्रतिस्पर्धी दावे कई बार अफ्रीकी देशों में जातीय-राजनीतिक हिंसात्मक मुकाबले/होड़ का कारण बन गए है। इसने अफ्रीका में राजनीतिक रूप से 'महत्वाकांक्षी और ध्रुवीकृत' देशों में प्रक्रियात्मक लोकतंत्र के एकीकरण को मजबूर बना दिया है जो एकीकरण करने वाली इनकी संस्थानिक व्यवस्थाओं को कमजोर कर रही है।

अफ्रीका में असुरक्षा इस महाद्वीप के आर्थिक विस्तार पर विशेषकर, इसके संसाधन आधारित (विस्तार) पर, प्रमुख वैश्विक ताकतों और नई चुनौतियों के बीच प्रतिस्पर्धा से जुड़ी हुई है। अफ्रीका में उभरती शक्तियों के बढ़ते महत्व के परिणामस्वरूप बाह्य शक्तियों द्वारा व्यावसायिक दावों का अधिकाधिक सुरक्षाकरण/प्रतिभूतिकरण हुआ है। इनमें से कुछ कर्ता/देशों द्वारा राजनीतिक असंतोष का चुनिंदा उपयोग विशिष्ट अफ्रीकी देशों में कार्यनीतिक अवसरों के रूप में किया गया है। कुछ मामलों में, इसका परिणाम अनुपातहीन सैन्य हस्तक्षेप के रूप में सामने आया है जो इस महाद्वीप में और अधिक सुरक्षा असंतोष की गुंजाइश पैदा कर रहा है।

इस जटिल सुरक्षा परिदृश्य के कारण अफ्रीका में अतिवादी/धार्मिक विघटनकारी विभाजन की दिशा में कट्टरपंथी लामबंदी की गुंजाइश पैदा हो गई है। यह हाल के वर्षों में इस महाद्वीप के कई भागों में आतंकी हमले में लगातार हो रही वृद्धि से स्पष्ट है। इन मामलों की घातकता अफ्रीका में क्रमिक हकीकत बन गई है, जब से उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) बलों ने वर्ष 2011 में लीबिया में गद्दाफी के विरूद्ध इस्लामी समूहों को उनके अभियानों में हथियार तथा दूसरे संबंधित संभारतंत्रीय समर्थन देना प्रारंभ किया। इस संबंध में, अप्रैल, 2013 में प्रकाशित संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में उल्लेख है, "[लीबिया] से जारी अवैध प्रवाह अफ्रीका और लेवान्त क्षेत्र के देशों में मौजूदा संघर्ष को हवा दे रहा है और आतंकवादी समूहों सहित *नॉन स्टेट एक्टर्स* के शस्त्रागारों को समृद्ध बना रहा है।"

इन सबसे बढ़कर, मानवीय सुरक्षा का संकट अफ्रीका में सर्वोपरि चिन्ता का विषय है। विश्व अर्थव्यवस्था में इस महाद्वीप के एकीकरण ने अभूतपूर्व आर्थिक वृद्धि/विकास के द्वार खोल दिए हैं जो साथ ही साथ यहां के लोगों के लिए सेवा वितरण और अवसर की उपलब्धता से संबंधित समस्याएं ला रहा है। आर्थिक वैश्विकरण प्रक्रिया के तहत, अधिकांश अफ्रीका में गरीबी की दर में दशक-पुरानी गिरावट राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तरों पर और शेष विश्व के लिए बढ़ती असमानता की सम्पाती है। लैंगिक, ग्रामीण/शहरी अवस्थिति और पारिवारिक आय के आधार पर, इस पूरे महाद्वीप में खाद्य, जल, स्वास्थ्य परिचर्या, स्वच्छता और शिक्षा जैसी आधारभूत सेवाओं की असमान उपलब्धता में बढ़ोत्तरी हुई है। इन विकास चुनौतियों में, महामारियों के फैलने के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य की आपात स्थिति इस समय अफ्रीका में एक बड़ी मानवीय मुद्दा बनी हुई हुई है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी अफ्रीकी देशों (इकोवास) के आर्थिक समुदाय ने इबोला को एक क्षेत्रीय सुरक्षा खतरा घोषित किया है जिसने पश्चिमी अफ्रीका में अब तक लगभग 20,000 लोगों को प्रभावित किया है और 7,000 से अधिक लोगों की जान ले ली है।

अफ्रीका की प्रतिक्रिया

अफ्रीकी देशों ने राजनीतिक शांति तथा स्थिरता की अपनी तलाश में अपने कुछ अंतरा- और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को सफलतापूर्वक सीमित कर लिया है। अंतर्राष्ट्रीय सहायता सहित क्षेत्रीय पहल के तहत, तत्कालीन संघर्ष प्रभावित कुछ देशों में राजनीतिक, समाजिक और वाणिज्यिक संस्थाओं का पुनर्निर्माण किया गया है। इकोवास युद्धविराम निगरानी समूह (ईसीओएमओजी) पश्चिमी अफ्रीकी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शांति प्रवर्तक के रूप में उभरा है। इस संबंध में अफ्रीकी संघ (AU) ने भी ठोस कार्य किया है। अफ्रीकी संघ (AU) चार्टर/घोषणापत्र ने संघर्ष के कारण पैदा हुई समस्याओं से सामूहिक रूप से निपटने में सदस्य राष्ट्रों को बेहतर ढ़ंग से सज्जित किया है। परिणामस्वरूप, अफ्रीकी संघ (AU) के राष्ट्र संघर्ष स्थलों/क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने के लिए *पैन-अफ्रीकी* बलों को न्यायसंगत तरीके से अक्सर तैनात करते रहते हैं। वास्तव में, अफ्रीकी संघ शांति एवं सुरक्षा परिषद (एयूपीएससी) ने अफ्रीका में संघर्ष को सीमित/नियंत्रित करने में निर्णायक भूमिका निभाई है।

अफ्रीकी संघ (AU) और दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय (एसएडीसी) जैसे क्षेत्रीय समूहों ने अफ्रीका के राजनैतिक 'महत्वकांक्षी' और जातीय 'ध्रुवीकृत' देशों में चुनावी जनादेशों पर प्रतिस्पर्धी दावे (करने वालों) के बीच प्रभावशाली मध्यस्थों की भूमिका निभाई है। अफ्रीकी संघ (AU) ने राजनैतिक लोकतंत्र की विश्वसनीयता को 'सक्षम विकल्प प्रणाली' के रूप में पहचानकर इसे एक प्रमुख स्थान प्रदान किया है जिसके कारण अफ्रीका में आर्थिक विकास तथा स्थिरता को प्रोत्साहन मिला है। मानवीय सुरक्षा

मोर्चे पर, अफ्रीकी संघ (AU) और इकोवास पश्चिम अफ्रीका में इबोला महामारी का प्रसार/फैलाव रोकने के प्रयासों में सक्रियता से जुटे हुए हैं।

भारत की भागीदारी

भारत और अफ्रीका ने संयुक्त राष्ट्र संघ में, अफ्रीकी संघ (AU) में और नई दिल्ली/राष्ट्रीय राजधानियों में नियमित परामर्शों के माध्यम से अपने घनिष्ठ सुरक्षा सहयोग को जारी रखा है। दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, सेशेल्स, कीनिया, तंजानिया, मोजाम्बिक, नाइजीरिया सहित अनेक अफ्रीकी देशों के साथ नई दिल्ली का सुरक्षा सहयोग कायम है। भारत ने अपनी पहली कार्यनीतिक भागीदारी पर दक्षिण अफ्रीका के साथ हस्ताक्षर किया है। दोनों (देश) विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए अफ्रीकी अतिरिक्त बलों को प्रचालित/सक्रिय रखने की दिशा में प्रतिबद्ध रहते हैं। अफ्रीका के संघर्ष स्थलों/क्षेत्रों में अवस्थित देशों में सुरक्षा प्रदान करने में (तथा) शांतिसेना में भारत के योगदान की संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) में, अफ्रीकी संघ (AU) में तथा इकोवास जैसे क्षेत्रीय निकायों में सराहना की गई है।

संयुक्त राष्ट्र शांति सेना अभियानों (यूएनपीकेओ) में भारत के योगदान को विश्वभर में, विशेषकर अफ्रीका में मान्यता मिली है। भारत प्रभावित क्षेत्रों की संघर्ष नियंत्रण तथा पुनर्निर्माण प्रक्रिया का हिस्सा बन गया है। संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों (यूएनपीकेओ) में कार्मिकों के तीसरे सबसे बड़े योगदानकर्ता के रूप में, संघर्ष नियंत्रण तथा पुनर्निर्माण प्रक्रिया में भारत के महत्वपूर्ण योगदान को अफ्रीका में मान्यता मिली है। अफ्रीका में भारत के 5,000 से अधिक शांति सैनिक हैं। वर्ष 2007 में, लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र अभियान में अपने परासैनिक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की 125 सदस्यीय महिला गठित पुलिस यूनिट (एफएफपीयू) का भारत का अद्वितीय योगदान रहा जो संयुक्त राष्ट्र शांति (अभियान) के इतिहास में सर्वप्रथम महिला सैन्यदल का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय महिला पुलिस बल की तैनाती लाइबेरिया तथा विस्तृत पश्चिमी अफ्रीका में संघर्ष प्रभावित महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में उभरी है।

अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा से संबंधित मुद्दों के संदर्भ में, भारत ने अफ्रीका में शांति बनाए रखने में अफ्रीकी संघ शांति एवं सुरक्षा परिषद (एयूपीएससी) द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की है। नई दिल्ली (अफ्रीका) महाद्वीप में शांति तथा सुरक्षा बनाए रखने में अफ्रीकी देशों की भूमिका और विश्व के अन्य भागों में शांति अभियानों में उनकी भागीदारी की सराहना करता है। भारत शांति एवं सुरक्षा कायम रखने में इस महाद्वीप की क्षमता बढ़ाने के लिए अफ्रीकी अतिरिक्त बल के गठन हेतु जारी प्रयास का समर्थन करता है। अफ्रीका भी अपनी ओर से, विशेषकर अफ्रीकी महाद्वीप में संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों

को भारत के सैद्धांतिक समर्थन और इसकी सतत भागीदारी की सराहना करता है। इसके अलावा, अफ्रीका की चुनावी प्रक्रिया में भारत इसके एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में शामिल/सक्रिय है। नई दिल्ली ने इबोला महामारी का मुकाबला करने के लिए संयुक्त राष्ट्र कोष में 1 करोड़ अमरीकी डॉलर की राशि को मंजूरी दी है और सुरक्षात्मक उपकरणों की खरीद के लिए 20 लाख अमरीकी डॉलर की अतिरिक्त धनराशि का वायदा किया है।

अफ्रीका के साथ भारत के सुरक्षा सहयोग पर और अधिक बल दिए जाने की आवश्यकता है। आतंकवाद के शिकार के रूप में, भारत अफ्रीका में प्रस्तावित बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय आतंक-विरोधी पहल में भागीदार बन सकता है। इसके अलावा, अफ्रीका में राजनीतिक-हथियारों से लैस अंतरा-राष्ट्र संघर्षों- अर्थात संघर्ष प्रभावित देशों के लोगों की न्यायोचित आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होने के साथ-साथ इन देशों की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखण्डता की रक्षा करने - के मामले में भारत की स्थिति को अधिक सक्रिय तथा स्पष्ट तरीके से व्यक्त करने की आवश्यकता है। इस नीति की अभिव्यक्ति अफ्रीकी संघ (AU) तथा क्षेत्रीय स्तरों पर द्विपक्षीय चैनलों के माध्यम से की जानी है तथा रसद/साजोसामान, कार्मिक तथा क्षमता निर्माण सहायता भी प्रदान की जानी है।

संस्तुति

क) भारत-अफ्रीका सुरक्षा सहयोग की एक समग्र आवधारणा विकसित की जानी चाहिए।

ख) अपेक्षाकृत छोटे राष्ट्रों पर विशेष ध्यान देते हुए रक्षा मंत्रालय स्तर के परस्पर दौरों पर अधिक जोर दिए जाने की आवश्यकता है।

ग) इसी प्रकार के परस्पर दौरे राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के स्तर पर भी प्रारंभ होने चाहिए।

घ) अफ्रीकी न्यायालयों तथा मानवाधिकारों को मजबूत बनाने में सहयोग करने की प्रतिबद्धता पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है।

ङ) अफ्रीकी अतिरिक्त बल के साथ साझेदारी के प्रयासों को और सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

च) भारत संभारतंत्र/रसद सहयोग और क्षमता निर्माण सहायता करके अफ्रीका में प्रस्तावित बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय आतंकवाद-विरोधी पहल में प्रयास करके भागीदार बन सकता है। विशेषज्ञताप्राप्त आतंकवाद-विरोधी एककों के प्रशिक्षण (की संभावनाओं) का पता लगाया जा सकता है।

छ) रक्षा उत्पादन भागीदारी को प्राथमिकता के आधार पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके अलावा, अवैध छोटे हथियारों के आयात पर तात्कालिक आधार पर रोक लगाने की आवश्यकता है।

ज) अफ्रीकी संघ (AU) सहयोगी समूह के सदस्य के रूप में, भारत अफ्रीका की चुनावी प्रक्रिया में

संभारतंत्र/रसद और क्षमता निर्माण मोर्चों पर अपनी भागीदारी प्रगाढ़ कर सकता है।

झ) भारत को अफ्रीका में अपनी संसाधन उत्पादन भागीदारी के लिए बहु-साझेदार वार्ता को प्रोत्साहन देना चाहिए।

ञ) आर्थिक भागीदारी और सुरक्षा सहयोग के बीच सुनियोजित सहक्रियात्मक सहयोग की आवश्यकता है।

ट) भारत चिकित्सा, शिक्षा आदि में प्रशिक्षण देने सहित शरणार्थियों के बाहर जाने पर निगरानी रखने के लिए, ठीक सोमालिया में नहीं तो *सोमालीलैण्ड/पुंटलैण्ड* की घरती पर अपने राजनयिक कार्मिकों को भेज/बैठा सकता है।

ठ) भारत मोगादिशु समुद्री पत्तन से आने-जाने में विश्व खाद्य कार्यक्रम की प्रदायगी में सहायता कर सकता है तथा स्थानीय कबीलाई नेताओं के बीच संबंध तथा सद्भावना पैदा करने के लिए इस मानवीय प्रयास का लाभ उठा सकता है।

ड) भारत पश्चिमी अफ्रीका में इबोला महामारी के नियंत्रण/रोकथाम में अफ्रीकी संघ (AU) तथा इकोवास के प्रयासों में योगदान दे सकता है। इबोला के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान किया जा सकता है और कम लागत वाली दवाइयां विकसित की जा सकती हैं। इस संबंध में, अफ्रीकी देशों को वायरस के पहलुओं पर आवश्यक रिकॉर्ड उपलब्ध कराने होंगे।

ढ) राजनीतिक तथा सुरक्षा संकट की स्थिति में भारत की स्थिति अधिक सकारात्मक और जोरदार/स्पष्ट तरीके से व्यक्त किए जाने की जरूरत है। इस संबंध में, विभिन्न साझेदारों की सहभागिता के माध्यम से एक अफ्रीकी कार्यनीतिक दस्तावेज तैयार किया जा सकता है।

ण) अफ्रीकी देशों से सहायता जुटाकर सुरक्षा तथा शासन की वैश्विक संस्थाओं में सुधार पर और अधिक जोर दिया जाना चाहिए।

*डॉ. *संदीपनी दास विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।*